Research Journal of Language, Literature and Humanities
Vol. **1(1),** 6-9, January **(2014)** *Res. J. Language, Literature and Humanities*

सार्क में 'पर्यावरणीय पहल'

हिमांशु यादव
राजनीति विज्ञान–बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय, झाँसी, उ.प्र., भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 29th November 2013, revised 15th December 2013, accepted 10th January 2014

Abstract

मानव के विकास के लिये उचित पर्यावरण की अत्यन्त आवश्यक होती है। इसी पर्यावरण में रहकर वह अपने प्रति और समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करता है। दक्षिण एशिया पर्यावरणीय दृष्टि से धनधान्य से परिपूर्ण था लेकिन वर्तमान समय में शून्य पर्यावरणीय परिदृश्य है। क्षेत्रिय सहयोग के चरण में दुनिया के अन्य क्षेत्रिय समूहों की तुलना में यह अपेक्षाकृत देरी से प्रवेश किया है। क्षेत्रीय संगठन आज भी कई सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक और सैन्य समस्याओं के लिये कोई रामबाण औषधि नहीं हैं। लेकिन यह निश्चित रूप से बिगड़ती हुई स्थिति से बिगड़ती हुई स्थिति में खास तौर से दुनिया के साथ मिलकर विकासशील देशों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

Keywords: सार्क, पर्यावरणीय, पहल।

प्रस्तावना

मानव के विकास के लिये उचित पर्यावरण की अत्यन्त आवश्यक होती है। इसी पर्यावरण में रहकर वह अपने प्रति और समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करता है। वास्तव में क्या हम पर्यावरण के प्रति सचेत है? यदि हॉ! तो फिर जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियॉ कैसे उत्पन्न हुयी। अर्थात हम सचेत नहीं है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन मानवता के प्रति एक विकराल रूप लेकर खड़ी है। वैसे तो जलवायु परिवर्तन से सभी देश परेशान है, लेकिन यह चुनौती विकासशील देशों के लिये आगे आकर खड़ी है। विशेष तौर पर दक्षिण एशिया के सम्बन्ध में चर्चा करना उचित ही होगा, जलवायु परिवर्तन का यदि सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है तो वह है विकासशील देश के गरीब लोगों पर, क्योंकि इनके पास अपनी स्थिति बनाए रखने और पर्यावरण बदलाव से रक्षा के लिये संसाधनों का प्रभाव का न होना है। 2009 में विश्व बैंक ने अपने दृष्टिकोण पत्र में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि दक्षिण एशिया की लगभग 60 करोड़ आबादी रोजाना 3.25 डालर से भी कम पर जीवन बसर करती है। अतः एक छोटा सा जलवायु परिवर्तन भी अपूर्णिय क्षति पैदा करेगा और एक बड़ी आबादी को निराश्रित कर देगा। जलवायू परिवर्तन के एक छोटे से प्रभाव का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि पिछले दो दशकों में दक्षिण एशिया के 75 करोड़ से ज्यादा लोग प्रहतिक आपदाओं से प्रभावित हुए हैं। मानवीय आकड़ों के अनुसार 230,000 मौते और 45 खरब डालर का नुकसान हुआ है।

राजनीतिक और सामाजिक विकास भी जलवायू परिवर्तन के लिये जिम्मेदार होते हैं। बड़े परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त दबाव के जरिये यह कमजोर या पतनशील सरकार की अस्थिरता को बढ़ा देता है, क्योंकि जिन चुनौतियों का सामना सरकार कर रही है, उससे निपटने की क्षमता पहले ही सीमित हो चुकी होती है। यहॉ तक कि यह विकसित और विकासशील देश में भी अस्त–धवस्त कर सकता है, क्यों कि सरकारों के पास जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने के लिये अपर्याप्त व्यवस्था का प्रभाव रहता है। इस प्रकार की स्थिति में समस्यायें बढ़ती है और निराशा का वातावरण तैयार होता है, जिससे देश के भीतर प्रशासनिक व्यवस्था ध्वस्त होती नजर आती है। आपसी टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाने की सम्भावना बन जाती है।

सरकारी और विभिन्न समूहों के मध्य टकराव

जलवायू परिवर्तन का वर्षा पर देखा जा सकता है, जिससे एक निश्चित क्षेत्र में उपलब्ध स्वच्छ जल में 20से 25 प्रतिशत की कमी आ सकती है। प्रतिशत में कमी आने से निशचित है कि कृषि क्षेत्र के आकार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जल स्तर में गिरावट आना भी निशचित हैं जल स्तर गिरने से पानी की कमी होगी,पानी की कमी खाद्यान को प्रभावित भी करेगी, खाद्यान के प्रभावित होने से उत्पादन शक्ति भी कमजोर होगी, उत्पादन शक्ति के कमजोर होने से दुनिया के कई हिस्सों में ज्यादा सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।

जलवायु का स्वास्थ्य पर असर और भी खतरनाक पड़ता है। दक्षिण एशिया एक गरीब और विकासशील क्षेत्र है, इसलिए स्वास्थ्य संबंधी असर के लिये यह अत्यन्त संवेदनशील है। जलवायू परिवर्तन से पर्यावरणीय विस्थापन एक अन्य मुद्दा खड़ा हो सकता है। दक्षिण एशियाई देश विस्थापन से सबसे ज्यादा प्रभावित हो सकते है। गरीब इलाकों को भी अत्यधिक खतरा है, जिससे गरीब इलाके में रहने वाले लोग निशचित ही प्रभावित होंगे। साउथ एशियन एन्वायरमेंट आडर 2009 के मुताबिक मानवीय विस्थापन के लिहाज से पश्चिम बंगाल, तटीय महाराष्ट्र, तटीय तमिलनाडु, तटीय आंध्र प्रदेश, गुजरात,तटीय उड़ीशा, पश्चिमी राजस्थान और उत्तरी कर्नाटक के अलावा श्रीलंका के तटीय इलाके और मालदीव सबसे ज्यादा संवेदनशील है।

दक्षिण एशिया का पर्यावरणीय परिदृश्य

UNIP संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने वैश्विक पर्यावरण की समीक्षा के लिये दिये गये अपने आदेश में दक्षिण एशिया की सरकारों और अन्य साझीदारों, उपक्षेत्रीय एजेंसिया और अंतरसरकारी एजेंसियों एवं विशेषज्ञों के साथ कई दौर की बातचीत के बाद दक्षिण एशिया क्षेत्रीय संगठन को SIEO 2009 जारी करने के लिये कहा था। इस रिपोर्ट ने देश और पर्यावरण के सन्दर्भ में तालमेल की पोल ही खोल कर रख दी। जिन बातों की चर्चा इस रिपोर्ट में की गयी हैं वे निम्न है, भूमि,वायू,जल और जैव विविधता। सबसे प्रयुक्त बात थी कि इस रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन के 5 कारकों को भी उल्लेख किया गया है – खाद्य सुरक्षा, जल सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, शहरी प्रबन्धन।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेखित किया गया कि दक्षिण एशियाई क्षेत्र में विश्व की जनसंख्या की 20 प्रतिशत आबादी यही पर निवास करती है। जब की दक्षिण एशिया के पास दुनिया की 5 फीसदी जमीन और द्रव्यमान है। इसमें 2025 तक 25 प्रतिशत का इजाफा होने का अनुमान है। दक्षिण एशिया के 75 प्रतिशत लोग गॉवों में निवास करते है, इसमें 25 प्रतिशत अत्यन्त गरीब है। ये लोग अत्यन्त वायु प्रदूषण में जीने के लिए मजबूर है जो स्वास्थ्य के लिहाज से काफी खतरनाक है। रिपोर्ट में स्पष्ट तौर पर लिख दिया गया कि दक्षिण एशिया क्षेत्र जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील

है। जलवायू परिवर्तन का असर हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियरों के सिकुड़ने के रू॰ में महसूस किया जा सकता है। प्रकृति के अनोखे भंडार ये ग्लेशियर सिंधु गंगा और ब्रम्हपुत्र जैसी प्रमुख नदियों के जल प्रवाह को बनाए रखने में मददगार हैं। ये नदियॉ दक्षिण एशिया के देशों बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल और पाकिस्तान के लाखों लोगों की जीवन रेखा मानी जाती है।

बदलती परिस्थिति सहस्त्राविदों के दो बड़े लक्ष्यों गरीबी घराने और स्वच्छ पेयजल मुहैया कराने को पूरा करने के सामने गंभीर चुनौती पैदा करती है।

पर्यावरण के सम्बन्ध में सार्क के विचार

दक्षिण एशिया पर्यावरणीय दृष्टि से धनधान्य से परिपूर्ण था लेकिन वर्तमान समय में शून्य पर्यावरणीय परिदृश्य है। क्षेत्रिय सहयोग के चरण में दुनिया के अन्य क्षेत्रिय समूहों की तुलना में यह अपेक्षाकृत देरी से प्रवेश किया है।

7 दिसम्बर 1985 में बांग्लादेश की राजधानी ढाका में आयोजित दक्षिण एशिया ई क्षेत्रीय सहयोग संघ की प्रथम औपचारिक रूप से गठन में अपनी सहभागिता दर्शायी। इस शिखर सम्मेलन में सार्क चार्टर का मुद्दा उठा और सभी ने इसका समर्थन भी किया, और स्वीकृति भी की। चार्टर में जो मूल लक्ष्य तय किये उनमें अन्य विषयों के साथ–साथ दक्षिण एशिया के लोगों के कल्याण को प्रोत्साहन और उनका जीवन स्तर सुधारना, आर्थिक विकास को तेज करना, क्षेत्र में सामाजिक प्रगति और सांस्कृतिक विकास और दक्षिण एशिया के देशों के बीच सामूहिक आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन और मजबूती प्रदान करना शामिल किया गया था। सम्मेलनों का लगातार दौर चलता रहा।

दक्षिण एशियाई क्षेत्र के विकास की चर्चा जोर–शोर से चलती रही लेकिन सार्क का मूल्य लक्ष्य– दक्षिण एशिया के लोगों का सामाजिक आर्थिक कल्याण और सांस्कृतिक उन्नयन था। लक्ष्य को हासिल करने के लिये आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृति, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र में सामुहिक साझेदारी पर जोर दिया गया था।

सार्क के संस्थागत ढांचा तय होने के पश्चात उसकी पिरामिडीय संरचना अर्थात पदसोपनीयता का क्रम दिखायी पड़ता है। चार्टर में महासचिव के साथ सचिवालय सात निदेशक और सामान्य कर्मचारी की व्यवस्था दी गई है। जनवरी 1987 में सार्क सचिवालय भी अस्तित्व में आ गया। सार्क की गतिविधियों के कियान्वयन और समन्वय की निगरानी संघ की बैठकों की व्यवस्था व अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और सार्क के बीच सेतु का काम करता है।

पर्यावरण और प्रकृतिक आपदा की दिशा में तीसरा सम्मेलन

सार्क से पर्यावरण मुद्दे पर अपनी स्थापना के समय से ही सचेत रहा है। पर्यावरण के संदर्भ में स्पष्ट रूप से चर्चा नेपाल की राजधानी काठमांडू में 24 नवम्बर 1987 को दिखायी पड़ा। यह सार्क का तीसरा सम्मेलन था। इस सम्मेलन में अन्य बातों के साथ–साथ पर्यावरण के रक्षण और संरक्षण एवं प्राकृतिक आपदा के कारणों और प्रभावों का सुनियोजित एवं समग्र रूपरेखा में अध्ययन कराने का फैसला लिया गया। इस अध्ययन का फैसला लेने का प्रमुख कारण था कि जंगलों की अंधाधुन्ध कटायी, जिससे पर्यावरण संतुलन डगमगाने लगा। इसका आभाष होते ही इसे अध्ययन का विषय बना दिया गया। उन लोगों ने यह भी पाया कि दक्षिण एशिया मानव जीवन पर गंभीर प्रभाव डालने वाले बाढ़,सूखा, भूस्खलन, तूफानी लहरों जैसी प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित है।

1987 में उठाया गया पर्यावरणीय सम्बन्धी अध्ययन दिसम्बर 1991 में पूरा हुआ। क्षेत्र के देशों में पर्यावरण और प्रकृतिक आपदा पर अध्ययन के लिये हर सदस्य देश ने अपने यहॉ मौजूद परिस्थितियों का व्यापक स्तर पर आकलन किया। सभी देश आपस में मिलकर पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की और विशेषज्ञों की मदद से रिपोर्ट भी तैयार की।

विश्व में सबसे गरीब क्षेत्रों में एक दक्षिण एशियाई क्षेत्र है, जो कि विशाल जनसंख्या, घनी आबादी के साथ–साथ गरीबी से भी लिप्त है। सार्क के सदस्य देशों में दुनिया की आबादी के 20 प्रतिशत लोग निवास करते हैं 3. 5 प्रतिशत भूभाग में निवास करनेवाले ये दुनिया की GNP महज 2 प्रतिशत उत्पादन करने की ये सामाजिक, आर्थिक स्थितियों के प्रतिमूल है। इसके अलावा लोगों का जीवन स्तर सुधारने में औद्योगिक कलकारखानों की उत्पत्ति आवश्यक है जिससे पर्यावरण प्रदूषण एवं कचरा भी विशाल मात्रा में मुक्त मिल जाता है भयंकर गरीबी के कारण सार्क क्षेत्र में पर्यावरण की विगड़ती हालत का सबसे ज्यादा असर गरीबों पर ही पड़ रहा है।

दक्षिण एशिया में उत्पादकता की निरन्तरता का स्थिर रखते हुये बढ़ाने के प्रति बड़ी चालाकी के साथ सोचना होगा और अपने वक्तव्यों को मूर्त रूप भी प्रदान करने की आवश्यकता भी जिससे अन्य देशों के साथ पर्यावरण के प्रति जागरूकता की उत्पत्ति की जा सके। रिपोर्ट में पर्यावरण की रक्षा और प्रबन्धन के लिये उपायों की क्षमता में वृद्धि करने के लिये महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को सुलझाया। महत्वपूर्ण कार्यक्रम जो कि निम्न है–पर्यावरण प्रबन्धन ढांचे को मजबूत करना, हिमालयी क्षेत्र में पहाड़ी विकास पर अनुसंधान और कार्य योजना, तटीय इलाका प्रबन्ध कार्यक्रम ऊर्जा एवं पर्यावरण कार्यक्रम, सार्ववानकी एवं जल संरक्षण कार्यक्रम प्रदूषण नियंत्रण एवं खतरनाक कचरा निस्तारण कार्यक्रम जैव विविधता प्रबन्धन के लिये सार्क साझेदारी कार्यक्रम संसाधन प्रबंधन पर जन भागीदारी पर्यावरणीय रूप से अनुकूल और सस्ते निवास संबन्धी तकनीक से जुड़ी जानकारी का आदान प्रदान पर्यावरण का काम करने वाले NGO का सार्क नेटवर्क, पर्यावरण में महिलाओं की भागीदारी पर्यावरण के लिये सार्क कोष पर्यावरण की हालत पर और अंतराष्ट्रीय मंचों में सार्क के सदस्य देशों के बीच सहयोग पर सार्क की रिपोट शामिल थे।

दिसम्बर 1988 में सार्क के चौथे शिखर सम्मेलन में ग्रीन हाऊस प्रभाव और क्षेत्र पर पड़ने वाले इसके असर का अध्ययन कराने का फैसला किया गया। ग्रीन हाऊस प्रभाव और दक्षिण एशिया पर इसके असर का अध्ययन टोरंटों में आयोजित लोक विज्ञान सम्मेलन का प्रमुख मुद्दा रहा। इसी वर्ष अप्रभशित बना चक्रवात और भूकंप ने सरकार और प्रमुखों का ध्यान आकर्षित किया था इस प्राकृतिक आपदा से अत्याधिक जान–माल की क्षति हुयी। इस क्षति को देखते हुये लोगों ने नवम्बर 1987 में काठमांडू में लिये गये फैसले के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की।

नेताओं ने विशेषज्ञों के समूह द्वारा परिकल्पित उपायों और कार्यक्रमों के समूह द्वारा राष्ट्रीय, द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक प्रयासों को बार–बार आ रही प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरण के लगातार क्षरण के कारण क्षेत्र की बढ़ती समस्याओं से निपटने के प्रति प्रतिबद्धता जताई। नेताओं ने कम से कम समय में अध्ययन पूरा करने का आहवान किया ताकि उससे सदस्य देशों को सार्थक सहयोग का खाका तैयार करने का आधार मुहैया हो सके। विद्वानजनों ने ग्रीन हाऊस प्रभाव और क्षेत्र पर पड़ने वाले असर पर भी एक संयुक्त अध्ययन कराने का फैसला लिया।

रिपोर्ट में पर्यावरण की रक्षा और प्रबंधन के लिये उपायों की क्षमता में वृद्धि करने के लिये महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को सुलझाया। महत्वपूर्ण कार्यक्रम जो कि निम्न है–पर्यावरण प्रबंधन ढॉचे को मजबूत करना, हिमालयी क्षेत्र में पहाड़ी विकास पर अनुसंधान और कार्य योजना, तटीय इलाका प्रबन्धन कार्यक्रम, ऊर्जा एवं पर्यावरण कार्यक्रम सार्कवानकी एवं जल संरक्षण कार्यक्रम प्रदूषण नियंत्रण एवं खतरनाक कचरा निस्तारण कार्यक्रम जैव विविधता प्रबन्धन के लिये सार्क साझेदारी कार्यक्रम, संसाधन प्रबंधन पर जन भागीदारी पर्यावरणीय रूप से अनुकूल और सस्ते निवास संबंधी

तकनीक से जुड़ी जानकारी का आदान–प्रदान पर्यावरण का काम करने वाले NGO का सार्क नेटवर्क पर्यावरण में महिलाओं की भागीदारी, पर्यावरण के लिये सार्क कोष, पर्यावरण की हालत पर और अंतराष्ट्रीय मंचों में सार्क के सदस्य देशों के बीच सहयोग पर सार्क की रिपोर्ट शामिल थे।

दिसम्बर 1988 में सार्क के चौथे शिखर सम्मेलन में ग्रीन हाऊस प्रभाव और क्षेत्र पर पड़ने वाले इसके असर य अध्ययन कराने का फैसला किया गया। ग्रीन हाऊस प्रभाव और दक्षिण एशिया पर इसके असर का अध्ययन टोरंटो में आयोजित लोक विज्ञान सम्मेलन का प्रमुख मुद्दा रहा। इसी वर्ष अप्रत्याशित चक्रवात और भूकंप ने सरकार और प्रमुखों का ध्यान आकर्षित किया था इस प्राकृतिक आपदा से अत्यधिक जान–माल की क्षति हुयी। इस क्षति को देखते हुये लोगों ने नवम्बर 1987 में काठमांडू में लिये गये फैसले के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की।

नेताओ ने विशेषज्ञों के समूह द्वारा परिकल्पित उपायों और कार्यक्रमों के समेह द्वारा परिकल्पित उपायों और कार्यक्रमों की पहचान करने और राष्ट्रीय, द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक प्रयासों को बार–बार आ रही प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरण के लगातार क्षरण के कारण क्षेत्र की बढ़ती समस्याओं से निपटने के प्रतिबद्धता जताई। नेताओ ने कम से कम समय में अध्ययन पूरा करने का आहवान किया ताकि उससे सदस्य देशों को सार्थक सहयोग का खाका तैयार करने का आधार मुहैया हो सके। विद्वानजनों ने ग्रीन हाऊस प्रभाव और क्षेत्र पर पड़ने वाले असर पर भी एक संयुक्त अध्ययन कराने का फैसला लिया।

सार्क ने 2007 को ग्रीन साउथ एशिया वर्ष के रूप में घोषित किया। इसी साल अप्रैल माह में सार्क नेताओं ने 14वें शिखर सम्मेलन में भूजल में आर्सेनिक के दूषण की समस्या से निपटने, मरुस्थल के प्रसार और ग्लेशियरों के सिकुड़ने पर सहयोग और प्रभावित लोगों की सहायता तेज करने के प्रति प्रतिबद्धता जताई। वैश्विक जलवायू में हो रहे बदलाव और समुद्र के स्तर में हो रही वृद्धि और इससे क्षेत्र में जीवन और जीवनस्तर पर पड़ रहे प्रभाव को लेकर नेताओं ने गंभीर चिंता जताई। उन लोगों ने इसके खतरे और प्रभाव के आंकलन एवं प्रबंधन की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के परिणाम पर पहल और कार्यक्रम अपनाने का आह्वान किया जिसके तहत भविष्यवाणी, चेतावनी और निगरानी के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन पर जानकारी साझा करना था ताकि दक्षिण एशिया में लोचदार जलवायू विकास पर काम किया जा सके। इसके लिए सभी नेता इस दिशा में साझी कार्रवाई की पहचान के लिए क्षेत्रीय विशेषज्ञों की टीम गठित करने पर राजी हुए।

दिसम्बर 2007 में सार्क मंत्रिपरिषद ने सामाजिक,आर्थिक,क्षेत्र में त्वरित विकास कार्यक्रमों को चलाने पर बल दिया। इस कार्यक्रर्म के क्रियान्वयन में विशेष विद्वानों को सामाजिक स्तर पर लोगों से बातची करने एवं उसे सफल बनाने के लिये समाचार एवं उचित मार्ग तलाशने को अनुरोध किया।

जलवायु परिवर्तन पर सार्क का 16वां शिखर सम्मेलन

भूटान की राजधानी थिंपू में अप्रैल 2010 में आयोजित 16वां सार्क शिखर सम्मेलन जलवायु परिवर्तन को समर्पित रहा। सार्क की स्थापना की रजत जयंती इस शिखर सम्मेलन की घोषणा में शार्क को हरित और खुशहाल दक्षिण एशिया की ओर करार दिया गया। ढाका घोषणा के अनुपालन और जलवायु परिवर्तन पर सार्क की कार्ययोजना की समीक्षा और इसके समय पर लागू करना सुनिश्चित करने के लिए हुई शिखर वार्ता में जलवायु परिवर्तन पर थिंपू घोषणा पत्र को मंजूरी दी गई। जलवायु परिवर्तन पर सार्क की कार्ययोजना में उल्लिखित क्षेत्रीय सहयोग के लिए स्पष्ट नीति और निर्देश तैयार करने के लिए विशेषज्ञ समूह साल में दो बार बैठक करेगा और जारी हो रहे बयान के लागू होने की सावधि निगरानी और समीक्षा करेगा। समूह अपनी रिपोर्ट सार्क के वरिष्ठ अधिकारियों के माध्यम से सार्क के पर्यावरण मंत्रियों को सौंपेगा।

थिंपू घोषणा को कैनकुन सम्मेलन की संभावित विफलता का पूर्वानुमान मान लेने पर भी यह समग्र क्षेत्रिय आत्मनिर्भरता प्रयासों को जारी रखने और हल निकालने की कोशिश थी। इसने निम्नलिखित प्रस्तावों को स्वीकार किया

सत्रहवें सार्क शिखर सम्मेलन में क्षेत्र में जलवायु खतरे संबंधित सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों से समग्र रूप से निपटने के जरिए पर अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए महासचिव को आयोग गठित करने का निर्देश दिया जाए।

जलवायु परिवर्तन पर प्रतिपालन और जागरूकता कार्यक्रम शूरू करना, अन्य कदमों में ग्रीन टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहन देना और सबसे बेहतर व्यवहार न्यून कार्बन निर्भरता और क्षेत्र के सम्मिलित विकास को प्रोत्साहन देना।

ऐसे सार्क तंत्र स्थापित करने की संभावना का पता लगाने के लिए अध्ययन कराना जो न्यून कार्बन तकनीक और नवीनीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करने वाली परियोजनाओं और दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय में न्यून कार्बन अनुसंधान एवं विकास संस्थान के लिए धन मुहैया करा सके।

शैक्षणिक पाठ्यक्रम में विज्ञान से संबंधित सामग्री को शामिल करना जिससे विज्ञान और जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभावों के बारे में समझदारी विकसित हो।

क्षेत्रीय वन विस्तार अभियान के तहत अगले पांच सालों 2010–15 में एक करोड़ पेड़ लगाना। यह कदम सदस्य देशों की राष्ट्रीय प्राथमिकता एवं कार्यक्रम के अनुसार हो।

जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभाव से दक्षिण एशिया के पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्मारकों व ढांचे को बचाने और संरक्षण के लिए राष्ट्रीय परियोजना और जहां जरूरी हो वहां क्षेत्रीय परियोजना का विकास।

क्षेत्र के राष्ट्रीय संस्थानों के मध्य संस्थागत सम्पर्क बहाल करना जिससे जलवायु परिवर्तन संबंधित इलाकों में सूचना एवं जानकारी का आदान–प्रदान और क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम को सहूलियत मिल सके।

क्षेत्र के साझे समुद्र और जल निकायों और जीवन को बनाए रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर सागरीय इनीशिएटिव गठित करना जिसे सार्क तटीय क्षेत्र प्रबंधन केंद्र को समर्थन हासिल हो।

जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की अनिवार्यता पर जोर और क्षेत्र के पर्वतों को शामिल करते हुए पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र खास कर ग्लेशियरों और स्थायी विकास और जीविका में उनके योगदान पर सार्क अंतर–सरकारी पर्वतीय इनीशिएटिव गठित करना जिसे सार्क वन्य केंद्र का समर्थन हासिल हो।

पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र खास कर ग्लेशियारों और स्थायी विकास और जीविका में उनके योगदान पर सार्क अंतर–सरकारी पर्वतीय इनीशिएटिब गठित करना जिसे सार्क वन्य केंद्र का समर्थन हासिल हो।

मौसम के बदलते मिजाज पर सार्क अंतर–सरकारी मानसून इनीशिएटिव गठित करना जिससे जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की अतिसंवेदनशीलता का आांकलन किया जा सके। इसे सार्क मौसम विज्ञान अनुसंधान केंद्र का समर्थन हासिल हो।

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन सीसीए के एकीकरण के साथ आपदा जोखिम घटाने पर सार्क अंतर–सरकारी जलवायू संबंधित आपदा इनीशिएटिव का गठन जिसे सार्क आपदा प्रबंधन केंद्र का समर्थन हासिल हो।

पर्यावरणीय सहयोग पर सार्क सम्मेलन के लिए संपुष्टि प्रक्रिया कम से कम समय में पूरा करना ताकि यह लागू होने में सक्षम हो सके।

हवाई विश्वविद्यालय द्वारा टीपिंग प्वाइंट पर रिपोर्ट
सर्व प्रथम प्रश्न उठता है क्या है टीपिंग प्वाइंट

''टीपिंग प्वाइंट जलवायु परिवर्तन में अवधारणा का बिन्दु है जिस समय जलवायु एक स्थिर दशा से दूसरे स्थिर दशा में परिवर्तित हो जाएगा।''

हवाई विश्व विद्यालय के द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर के विभिन्न देशों के जलवायु टिपिंग प्वाइंट के खतरनाक होने की चेतावनी दी गई है। इस अध्ययन के विश्लेषकों की माने तो कार्बन डाईआक्साइड के उत्सर्जन को रोकने के लिये कोई नया कदम नहीं उठाया गया तो विश्व के ज्यादातर शहर 2047 तक जलवायू के टीपिंग प्वाइंट तक पहुॅच जाएगे।

यह भविष्यवाणी 12 विभिन्न देशों के 21 जलवायु केन्द्रों द्वारा स्वतंत्र रूप से विकसित 39 जलवायु मॉडलो के एक विश्लेषण के आधार पर की गई है। हवाई विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के अनुसार ये जलवायु मॉडल वर्ष 1860 से 2005 के बीच सात पर्यावरणीय परिवर्तनशीतलता के आधार पर तैयार किये गये है, जैसे कि सतत के समीप हवा के तापमान और सर्वेक्षण आदि रिर्पोट के अनुसार, 1 शोधकर्ता आगे जाकर यह पता लगाने का प्रयास कर रहे है कि किस वर्ष जलवायू परिवर्तन होकर विभिन्न स्थानों पर ऐतिहासिक सीमा पार कर जाएगा।

अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तनशीलता का अनुमानित समय निधारित करना एक तरह का प्रथम प्रयास होगा जब ग्लोबल वार्मिग दुनिया के प्रमुख शहरों में आदर्श बन जाएगा।

हवाई विश्वविद्यालय के बेवसाइड पर विश्व के सभी शहरों की सूची उपलब्ध कराई गई है, जिसमें यह बताया गया है कि मालद्वीप की राजधानी माले 2025 तक टीपिंग प्वांइट पर पहुॅच जाएगा,यदि उत्सर्जन की क्रिया यथावत चलती रही।

निष्कर्ष

पर्यावरणीय समस्या और जलवायु परिवर्तन पर सार्क के प्रयास प्रभावशाली सिद्ध हुये। जलवायु परिवर्तन की समस्या वैश्विक है, लेकिन दक्षिण एशिया ने इस क्षेत्र में अहम पहल की है। लेकिन आलोचकों ने इसको केवल एक ढकोसला बताया है। इसे गतिविहीन बताया है। सार्क देशों खास तौर से इसके दो बड़े सदस्य भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक दबाव के कारण कार्यान्वयन असंतोषप्रद है। वर्तमान समय में दोनों राष्ट्रों के मध्य आपसी सद्भाव मे वृद्धि हुयी है। निश्चय ही पर्यावरणीय मुद्दे के प्रति ये दोनों राष्ट्र अत्यधिक सचेत होगे।

क्षेत्रीय संगठन आज भी कई सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, राजनीतिक और सैन्य समस्याओं के लिये कोई रामबाण औषधि नहीं हैं। लेकिन यह निश्चित रूप से बिगड़ती हुई स्थिति से बिगड़ती हुई स्थिति में खास तौर से दुनिया के साथ मिलकर विकासशील देशों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सन्दर्भ

1. World Bank, South Asian Region: Towards a Climate Change Strategy, URL:www.indiaenvironmentportal.org.in /content/towards-a-climate-change-strategy-south-asia-region **(2013)**

2. Climate change refers to any change in climate over time, whether due to natural variability or as a result of human activity. This usage differs from that in the United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC), which defines 'climate change' as: "a change of climate which is attributed directly or indirectly to human activity that alters the compositon of the global atmosphere and which is in addition to natural climate variability observed over comparable time periods" **(2013)**

3. South Asian Environment Outlook-2009, SAARC Secretariat, Kathmandu,1 **(2009)**

4. Kathmandu Declaration of the Heads of State or Government of the Member Countries of SAARC issued on November 4, 1987 Declaration of SAARC Summits (1985-1998), SAARC Secretiat, Kathmandu, Nepal, August 30 **(2001)**

5. Regional Study on the causes and consequences of natral disasters and the Protection and Preservation of the Environment, SAARC Disaster Management Centre, New Delhi, 382-83 **(2008)**

6. Regional Study on the causes and consequences of natral disasters and the Protection and Preservation of the Environment, SAARC Disaster Management Centre, New Delhi, 382-83 **(2008)**

7. Summit Declaration, Fourth SAAC Summit, SAARC Secretariat, Kathmandu, Nepal, August **(2001)**

8. SAARC Workshop Climate Change and Disasters: Emerging Trends and Future Strategies 21-22 August 2008 Kathmandu, Nepal **(2008)**

9. Declaration of Tenth SAARC Summit, Colombo, July,1998, Declaration of SAARC Summits (1985-1998), SAARC Secretariat, Kathmandu, Nepal, August **(2001)**

10. Decration of Fourteenth SAARC Summit, New Delhi, April 2007. http://www.saarc.sec.org, 1 **(2007)**

11. SAARC Workshop: Climate Change and Disasters-Emerging Trends and Future Strategies, 21-22 August 2008, Kathmandu, Nepal, SAARC Disaster Management Centre, New Delhi. **(2008)**

12. Sixteenth SAARC Summit Thimpu, 28-29 April 2010, Thimpu Statement on Climate Change, http://www.saarc.sec.org **(2010)**

13. World Focus Hindi 11 **(2012)**

14. Indian Cronnical oct-pag no 161 **(2013)**